卐 वीतरागाय नमः 卐

श्री विशद
यागमण्डल विधान

माण्डना

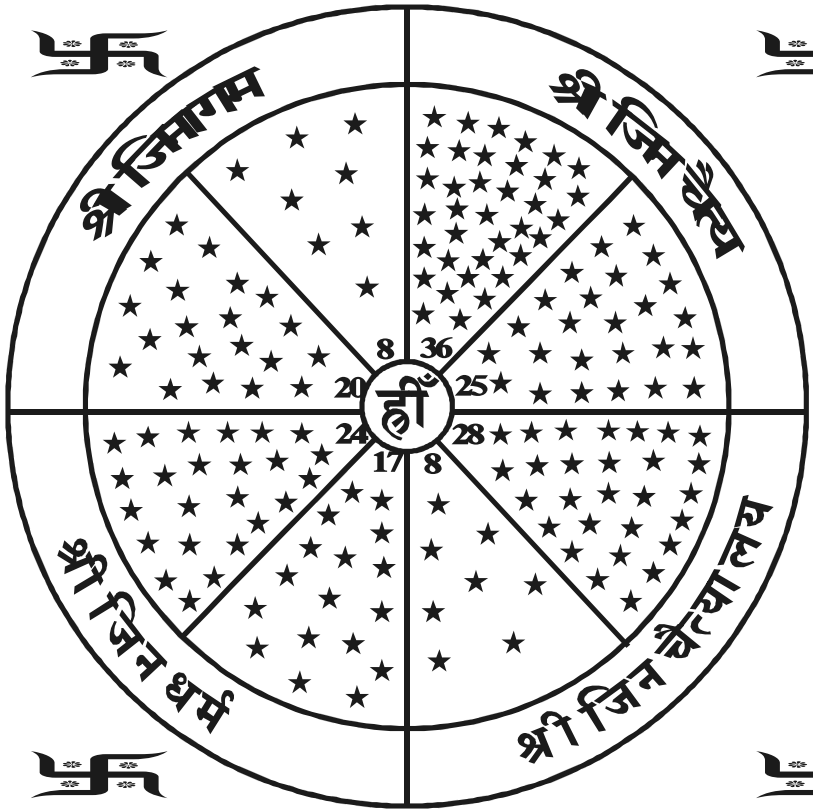

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – श्री विशद यागमण्डल विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम, 2008

प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं
क्षुल्लक श्री 105विसोमसागरजी महाराज,

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी 9660996425 सपना दीदी
– आरती दीदी

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566
5. सरस्वती प्रिंटर्स एवं स्टेशनर्स, चाँदी की टकसाल, जयपुर

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

स्व. श्री सुन्दरलालजी एवं श्रीमती चमेली देवी की स्मृति में
पुत्र-श्री भागचन्द, पौत्र- अनिलकुमार (सी.ए.), सुनीलकुमार मन्दौपुर वाले
महावीर मार्ग, मालपुरा, जिला-टोंक (राज.) ● मो. 9252111700

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

वर्तमान अवसर्पिणी का यह पंचम काल है जिसे दुःखम् काल भी कहा जाता है। इसमें प्रत्येक प्राणी दुःखी नजर आता है। कहा भी है **''कोई तन दुःखी, कोई मन दुःखी, कोई धन दुःखी दीखे या जग में ना कोई सर्व सुखी दीखे।''**

दुःख मैटने के लिए धर्म का आलम्बन लिया जाता है। धर्म के आलय देव-शास्त्र-गुरु जिनमें देव का इस काल में अभाव है उनके अभाव में स्थापना निक्षेप का आलंबन लेकर उनके प्रतिबिम्ब स्थापित कर उनकी आराधना भव्य प्राणी करके पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। प्रतिबिम्ब को चैत्य या प्रतिमा कहा जाता है। जैन सिद्धांत में नवदेव भव्य प्राणियों के द्वारा पूज्य माने गये हैं।

जिन चैत्य पाषाण, धातु आदि के बिम्ब बनाकर विभिन्न प्रतिष्ठा मंत्रों के द्वारा मंत्रित करके प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। तभी यह बिम्ब पूज्यता को प्राप्त होता है। प्रतिष्ठा के अवसर पर **'श्री यागमण्डल विधान पूजा'** करना आवश्यक माना गया है अतः विधिवत् एवं सांगोपांग पूजा की विधि पूर्ण की जा सके। इस हेतु विधान रचना का भाव उत्पन्न हुआ। इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो सुधीजन आगाह कर अनुगृहीत करें एवं प्रतिष्ठा-विधि के अनुसार करके धर्मलाभ प्राप्त करें तथा अन्य भव्य जीवों को शुभोपयोग में अपने जीवन को लगाने और पुण्य-संचय करने हेतु आलंबन देकर कल्याण का आधार प्रदान करें।

आर्षमार्गी प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलजी ने आग्रह किया- महाराज श्री (आचार्यश्री) प्रतिष्ठा के दिनों में इतने कार्य रहते हैं कि विधान को पूरा करना बड़ा मुश्किल होता है। पूर्व विधान पुस्तक में पूजा और 250 अर्घ्य हैं। इसका कुछ संक्षेपीकरण हो सके तो अति उत्तम होगा। अतः त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य एक साथ दिए गये साथ ही 64 सिद्धियों के अर्घ्य भी मुख्य आठ भेद रूप से दिए गये हैं। मंत्र लेखन में **पं. सुगनचन्दजी केकड़ी** में भरपूर सहयोग दिया जो आशीर्वाद के पात्र हैं।

- आचार्य विशदसागर

प्राक्कथन

प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी संत हैं। आचार्यश्री निरन्तर आगमों के अध्ययन व पूजन विधान रचना में संलग्न रहते हैं।

आचार्यश्री ने संस्कृत में लिखित अनेक विधानों का हिन्दी अनुवाद किया है। आचार्यश्री द्वारा लिखित **श्री पार्श्वनाथ विधान, श्री चन्द्रप्रभ विधान, श्री मुनिसुव्रत विधान, श्री नेमिनाथ विधान, श्री महावीर विधान, श्री भक्तामर महामंडल विधान, श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान, श्री नवग्रह शांति विधान** वर्तमान में लोकप्रिय हैं। आचार्यश्री अपने चातुर्मास काल प्रवास के दौरान स्वरचित विधानों द्वारा जैन समाज में पूजा विधान करने हेतु प्रेरित करते हैं।

आचार्यश्री ने **'यागमण्डल विधान'** का संक्षिप्तीकरण किया है। सरल, सुगम, बोधगम्य भाषा में रचना करके वर्तमान, भविष्यत्, भूतकाल संबंधी 72 अर्घों का, 24 अर्घों में एवं ऋद्धिधारी मुनियों संबंधी 48 अर्घों का 8 अर्घों में संक्षिप्तीकरण किया है। जो नित्य प्रति किये जाने वाले पूजन, विधान के साथ **'यागमण्डल विधान'** करने हेतु उपयोगी रहेगा।

उक्त **'श्री विशद यागमण्डल विधान'** की रचना में तीर्थंकर के नाम और जन्म आदि का विषय श्री जयसेन स्वामी कृत प्रतिष्ठा पाठ से लिया गया है जो सभी को ज्ञातव्य हो।

हम आशा करते हैं कि **आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज** भविष्य में भी इसी तरह अपनी काव्यमयी भाषा का उपयोग करके सरल, सुगम बोधगम्य भाषा में विधानों की रचना करके समाज को लाभान्वित करते रहेंगे।

चरणावनत्

कैलाशचन्द्र जैन

प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्रेशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-
ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन- वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-
संलग्न- रत्न- किरणच्छवि- धूस- राध्रिम्।
प्रस्वेद- ताप- मल- मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-
भक्त्या जलै- र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

(चारो कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...... देशे.. प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008.. जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे.. तिथौ... वासरे... पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका- श्रावक-श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

अभिषेक मंत्रह्नह्नॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इ्वीं इ्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। मृत्युं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वचौरभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वदुष्टभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमृगभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगजमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगोमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमहिषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वधान्यमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगुल्ममारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपुष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेदनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकर्माष्टकं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वं भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्रह्वह्वॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकांनां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घह्वह्व उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

दोहा

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार।।3।।
हरता अघ-अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण राश।।4।।
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।7।।
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।8।।
तुम पद पङ्कज पूजतें, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय।।9।।
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलै आपतै आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।12।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करे।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार।।17।।
इन्द्रादिक गणपति थकी, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारके, कीजे आप समान।।18।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।
जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।
वन्दौं पांचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघन हरन मंगल करण, पूरन परम प्रकाश।।21।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।
मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वंदौं स्वयमेव।।24।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदौं मन वच काय।।25।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करों, हरों असाता कर्म।।26।।
या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... ।। *पुष्पांजलि क्षिपामि*।।

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ।।3 ।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।4 ।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।5 ।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।6 ।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7 ।।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्ग-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-वितताैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।

श्री मल्लि: स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रत:।
श्री नमि: स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथ:।
श्री पार्श्व: स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमान:।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघा: स्फुरन्मन: पर्यय शुद्धबोधा:।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।1 ।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।2 ।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।3 ।।
प्रज्ञा-प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा: प्रत्येकबुद्धा: दशसर्वपूर्वै:।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।4 ।।
जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाद्धा:।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न: ।।5 ।।
अणिम्नि दक्षा:कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ता: कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न: ।।6 ।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता:।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।7 ।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्था:।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशा:,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो न: ।।9 ।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्त:।
अक्षीणसंवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।10 ।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्नह्न **ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ्य पद प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री यागमण्डल विधान स्तवन

कर्मघाती नाश करके, बन गये अर्हन्त हैं।
ज्ञान दर्शन वीर्य सुख, प्रभु ने जगाए ऽनन्त हैं।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।1।।

नाश करके कर्म आठों, सिद्ध के गुण प्राप्त हों।
अष्ट गुण पाकर जगत् के, सभी प्राणी आप्त हों।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।2।।

दर्शज्ञानाचरण तप अरु, वीर्य यह आचार हैं।
पालते आचार्य जिनको, जगत् मंगलकार हैं।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।3।।

अंग पूरव का जगा शुभ, जिन मुनि का ज्ञान है।
परम परमेष्ठी उपाध्याय, की अलग पहचान है।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।4।।

ज्ञान में अरु ध्यान तप में, साधु रहते लीन हैं।
पूर्णतः जो विषय आशा, संग से भी हीन हैं।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।5।।

चार मंगल और उत्तम, शरण जग में चार हैं।
विघ्नहर महामंत्र है शुभ, श्रेष्ठ अपरम्पार है।।
लोक में मंगल रहे जो, श्रेष्ठ जिनकी अर्चना।
विघ्न सारे दूर होते, भक्ति से कर वंदना।।6।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री यागमण्डल विधान पूजन

स्थापना

हे तीर्थंकर ! हे कर्मजयी, सर्वज्ञ प्रभु अन्तर्यामी।
हे चिदानन्द ! आनन्द कन्द, करुणानिधान शिवपुरगामी।।
हे धर्मपोत ! विज्ञानरूप, महिमा महान् मंगलकारी।
हे शुद्धस्वरूपी ! मोहजयी, हे महामुनि अतिशयधारी।।
हम तुमको नाथ पुकार रहे, हों विघ्न दूर सारे भगवन्।
यह भक्त सुमन लेकर आए, करते हैं उर में आह्वानन।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः !अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद)

नीर का निर्मल कलश यह, प्रभु लाया हाथ में।
जन्म मृत्यु नाश करने, शरण आया नाथ मैं।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुगन्धित गंध मनहर, कर रहा अर्चन प्रभो !।
नाश हो भव ताप मेरा, वंदना करता विभो !।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अक्षत शुद्ध निर्मल, कर रहे अर्पित धवल।
प्राप्त हो अक्षय सुपद शुभ, श्रेष्ठ हमको भी अमल।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प की शुभ गंध सुरभित, कर रही पावन गगन।
काम की बाधा मिटे मम्, कर्म हों सारे शमन।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस ले नैवेद्य मंगल, अर्चना को आये हैं।
क्षुधा बाधा नाश हो मम्, भावना यह भाये हैं।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह कर्पूर से हम, प्रज्ज्वलित कर लाये हैं।
मोह का तम नाश हो मम्, वन्दना को आये हैं।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप यह सुरभित सुगन्धित, खे रहे हम आग में।
क्षीण होवें कर्म आठों, हम फँसे न राग में।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भाँती के सरस फल, कर रहे अर्पित परम।
मोक्षफल हो प्राप्त हमको, लक्ष्य मेरा यह चरम।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य आठों शुद्ध प्रासुक, से बनाया अर्घ है।
प्राप्त करना सुपद हमको, श्रेष्ठ है जो ऽनर्घ है।।
पञ्च गुरु मंगल जगोत्तम, शरण भी चारों मिलें।
हृदय में सम्यक्त्व संयम, के सुमन अनुपम खिलें।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला करने यहाँ, आए हम हे नाथ ! ।
वन्दन करते भाव से, झुका रहे हैं माथ।।

(शम्भू छंद)

परमेष्ठी जिन पाँच हमारे, मंगल उत्तम शरण कहे।
तीन लोकवर्ती जीवों को, मंगलकारी आप रहे।।
भूत-भविष्यत-वर्तमान के, चौबिस जिनको ध्याते हैं।
चरण कमल में तीन योग से, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

जो भाव सहित इनको ध्याते, दुःख उनके पास नहीं आते।
जो शरण प्राप्त कर लेते हैं, उनके सब संकट कट जाते।।
जो पूजा करते भाव सहित, वह भी निहाल हो जाते हैं।
वह पा लेते परमेष्ठी पद, अरु लोक पूज्य बन जाते हैं।।2।।

शुभ पुण्य उदय से हे स्वामी !, दर्शन करने हम आ पाए।
हम हृदय पात्र में हे भगवन् !, यह भाव सुमन भर के लाए।।
हमको भव सुख की चाह नहीं, भव सागर तिरने आए हैं।
हम प्राप्त करें तव पदवी को, बस यही भावना भाए हैं।।3।।

पंचाचार का पालन करते, जैनाचार हैं लोक महान।
पञ्च महाव्रत पाने हेतु, करते हम उनका गुणगान।।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय को है वन्दन।
अष्ट द्रव्य से करते हैं हम, उपाध्याय का गुण अर्चन।।4।।

ज्ञान ध्यान तप लीन मुनीश्वर, वीतरागता धार रहे।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले, भव्यों के आदर्श कहे।।
सर्व सिद्धियों के धारी, जिनको भव सुख न भाया है।
प्रभु रहे नहीं हैं संसारी, ऐसा कुछ अतिशय पाया है।।5।।

तुम भव सागर से पार हुए, हमको भी भव से पार करो।
यह भक्त पुकारें भक्ति से, हे दयासिन्धु ! स्वीकार करो।।
जो पथ प्रभु तुमने पाया है, वह मोक्ष महल को जाता है।
इस पथ पर चलता जो प्राणी, वह मोक्ष महाफल पाता है।।6।।

हे नाथ ! आपकी पूजा का हम, शुभ फल पाने आए हैं।
हम पञ्च परम पद प्राप्त करें, अतएव शरण को पाए हैं।।
तव दर्शन करके हे भगवन् !, हमको यह सच्चा ज्ञान मिला।
मेरे अन्तर में हे भगवन् !, श्रद्धा संयम का फूल खिला।।7।।

जो सकल व्रतों को प्राप्त करें, वह सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
जो द्वादश तप तपते सम्यक्, वे श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।
हम ऋद्धि सिद्धियों को तजकर, अब परम सिद्ध पद को पाएँ।
हम कर्म नाश करके सारे, प्रभु मुक्ति वधू को पा जाएँ।।8।।

(अडिल्य छंद)

परमेष्ठी जिन पाँच परम पद पाए हैं।
मंगल उत्तम शरण चार कहलाए हैं।।
तिन की पूजा करते हैं हम भाव से।
चरण शरण को पाते हैं प्रभु चाव से।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन योग से वंदना, करते बारम्बार।
शीश झुकाते भाव से, पाने सौख्य अपार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा- परमेष्ठी हैं पञ्च अरु, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

परमेष्ठी मंगलोत्तम शरण के अर्घ्य

हे जिनेन्द्र ! तुमने अनादि की, भव संतति का नाश किया।
अर्हत् की पदवी को पाकर, केवलज्ञान प्रकाश किया।।
चरण कमल में प्रभु आपके, भाव सहित करते अर्चन।
मोक्षमार्ग के परम प्रकाशक, करते हम शत्-शत् वंदन।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो अनंत भवार्णवभय निवारकानन्त गुणस्तुताय अर्हते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का नाश किए प्रभु, भाव कर्म का किए विनाश।
चित् चैतन्य स्वरूप निरत हो, निज स्वभाव में कीन्हे वास।।
जिन त्रैकालिक सिद्ध प्रभु को, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हम शत्-शत् वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽष्टकर्म विनाशक निजात्म तत्त्वविभासक सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार परायण हैं जो, शिक्षा-दीक्षा के दाता।
सप्त तत्त्व छह द्रव्य धर्म अरु, नय प्रमाण के हैं ज्ञाता।।
जैनाचार्य लोक में पूजित, का हम करते हैं अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हम शत्-शत् वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽनवद्य विद्या-विद्योतनाय आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अर्थ श्रुत तत्त्व बोध के, ज्ञाता मुनिवर लोक महान्।
अध्ययन-अध्यापन में रत जो, उपाध्याय सद्गुण की खान।।
द्वादशांग श्रुत को करते हैं, भाव सहित हम भी अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हम शत्-शत् वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो द्वादशांग परिपूरण श्रुत पाठनोद्यत बुद्धि विभवोपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप पर्वत के भेत्ता, द्वय प्रकार तप के धारी।
शैय्याशन जिनकी विविक्त है, निर्विकार हैं अविकारी।।
रत्नत्रय रत सर्व साधु का, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हम शत्-शत् वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो घोरतपोऽभि-संस्कृत-ध्यान-स्वाध्याय निरत साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

सुर-नर विद्याधर से पूजित, अर्हत् मंगल गाये।
जल-फल आदि अष्ट द्रव्य से, हम पूजा को आये।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हत्मंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पाद विनाश रूप जो, अखिल वस्तु को जानें।
परम सिद्ध परमेष्ठी को हम, मंगलमय पहिचानें।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो सिद्धमंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय शुभ वैभव पाए, सर्वसाधु अविकारी।
रोग उपद्रव मृग मृगेन्द्र सब, दूर भागते भारी।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुमंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी द्वारा अवगत, जैन धर्म को जानो।
सर्वलोक में मंगलमय शुभ, मंगलकारी मानो।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवलिप्रज्ञप्त धर्ममंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-तातंक)

लोकोत्तम जिनराज पदाम्बुज, की हैं सेवा सुखकारी।
रिद्धी-सिद्धि प्रदायक उत्तम, सर्व दोष नाशनहारी।।
जल-फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करता अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत्-शत् वन्दन।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से च्युत होकर के, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।
सिद्धलोक में उत्तम हैं जो, करते लोकालोक प्रकाश।।
जल-फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करता अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत्-शत् वन्दन।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो सिद्धलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र-नरेन्द्र सुरेन्द्रादि से, अर्चित संयम तप धारी।
सर्वसाधु लोकोत्तम जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।।
जल-फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करता अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत्-शत् वन्दन।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष आदि पिशाच का, जिससे होता है मर्दन।
परम केवली कथित धर्म का, भाव सहित करता पूजन।।
जल-फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करता अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत्-शत् वन्दन।।13।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवलिप्रज्ञप्तधर्म लोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों की शरण लोक में, अर्चनीय जिन श्रेष्ठ कही।
भव भयहारी अष्ट कर्म की, नाशनहारी पूर्ण रही।।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, करूँ अष्ट द्रव्य से अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करता मैं शत्-शत् वंदन।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हत्शरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध आदि गुणधारी, चिदानन्द हैं अमृतरूप।
शरण प्राप्त हो सिद्ध प्रभु की, जो पा जाते आत्म स्वरूप।।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, करूँ अष्ट द्रव्य से अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करता मैं शत्-शत् वंदन।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योसिद्धशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सर्व प्रयोजन तजकर, सर्व साधु की मिले शरण।
सर्व चराचर द्रव्य छोड़कर, वीतरागता करूँ वरण।।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, करूँ अष्ट द्रव्य से अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करता मैं शत्-शत् वंदन।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम केवली के मुखोद्गत, धर्म जीव का हितकारी।
जैन धर्म की शरण प्राप्त हो, सर्व जगत मंगलकारी।।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, करूँ अष्ट द्रव्य से अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करता मैं शत्-शत् वंदन।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवली प्रज्ञप्त धर्म शरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संसार दुःखों के नाशी, कहे अनादि और अनन्त।
परमेष्ठी मंगल लोकोत्तम, शरण चार कहते भगवन्त।।
भक्ति-भाव से पूजा भक्ति, के यह विशद कहे आधार।
सुख-शांति के हेतु विनय से, करता वन्दन बारम्बार।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिप्रभृति धर्मशरणांत प्रथम वलय स्थित सप्तदश जिनाधीश यागदेवताभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- तीन काल में जिन हुए, प्रतिकाल चौबीस।
पुष्पांजलि में पूजकर, चरण झुकाऊँ शीश।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य

भूतकाल के प्रथम जिनेश्वर, श्री निर्वाण देव शुभ नाम।
वर्तमान के तीर्थंकर जिन, आदिनाथ के चरण प्रणाम।।
महापद्म भावी तीर्थंकर, के पद वन्दन करूँ त्रिकाल।
मैं त्रिकाल तीर्थंकर जिनको, अर्घ्य चढ़ाऊँ योग सम्हाल।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री निर्वाण ऋषभ महापद्म तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय तीर्थंकर सागरजिन, भूतकाल में हुए महान्।
वर्तमान के अजितनाथ जिन, के पद वंदूँ मैं धर ध्यान।।
भावी जिन का जैनागम में, श्री सूरप्रभ आता है नाम।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, करता बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री सागर अजित सूरप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासाधु जिन भूतकाल के, तृतिय तीर्थंकर जानो।
वर्तमान के संभव जिनवर, अश्व चिह्न युत पहिचानो।।
सुप्रभ जिन भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री महासाधु संभव सुप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलप्रभ भूतकाल के, हैं चतुर्थ तीर्थंकर देव।
अभिनन्दनजी वर्तमान के, तिनको वंदूँ यहाँ सदैव।।
स्वयंप्रभ हैं भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री विमल अभिनन्दन स्वयंप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शुद्धाभ जिनेश्वर पञ्चम, भूतकाल के रहे महान्।
सुमतिनाथजी वर्तमान के, चकवा है जिनकी पहिचान।।
सर्वायुध भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शुद्धाभ सुमति सर्वायुध तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीधर तीर्थंकर षष्ठम हैं, भूतकाल के श्रेष्ठ महान्।
पद्मप्रभु हैं वर्तमान के, पद्म चिह्न जिनकी पहिचान।।
श्री जयदेव जिनेश्वर भावी, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री श्रीधर पद्मप्रभु जयदेव तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम हैं तीर्थेश भूत के, श्रीदत्त है जिनका नाम।
श्री सुपार्श्वजिन वर्तमान के, जिन चरणों में विशद प्रणाम।।
कहे उदयप्रभ भावी जिनवर, तीन लोक में पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री श्रीदत्त सुपार्श्व उदयप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धाभ जिनेश्वर अष्टम, भूतकाल में हुये हैं सिद्ध।
वर्तमान के चन्द्रप्रभुजी, सर्वलोक में रहे प्रसिद्ध।।
प्रभादेव जिन भावी जिनवर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री सिद्धाभ चन्द्रप्रभु प्रभादेव तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम जिनेश्वर भूतकाल के, श्री अमलप्रभ जिनका नाम।
वर्तमान के पुष्पदन्त जिन, के पद बारम्बार प्रणाम।।
श्री उदङ्क भावी तीर्थंकर, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अमलप्रभ पुष्पदन्त उदङ्क तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल के दशवें जिनवर, श्री उद्धारजी रहे महान्।
वर्तमान के शीतल जिन का, भाव सहित करता गुणगान।।
प्रश्नकीर्तिजी भावी जिन हैं, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री उद्धार शीतल प्रश्नकीर्ति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल के तीर्थंकर जिन, अग्निदेव है जिनका नाम।
वर्तमान के ग्यारहवें जिन, श्री श्रेयांस को करूँ प्रणाम।।
जयकीर्ति तीर्थंकर भावी, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अग्निदेव श्रेयांस जयकीर्ति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तीर्थंकर बारहवें, भूतकाल के रहे महान्।
वासुपूज्य जिन वर्तमान के, भैंसा चिह्न रही पहिचान।।
पूर्णबुद्धि भावी जिनवर हैं, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री संयम वासुपूज्य पूर्णबुद्धि तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छंद)

श्री शिव तीर्थंकर तेरहवें, भूतकाल के आप कहाए।
विमलनाथजी वर्तमान के, तीर्थंकर पदवी को पाए।।
निष्कषाय जी भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।13।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शिव विमलनाथ निष्कषाय तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पाञ्जलि जिन भूतकाल के, चौदहवें तीर्थेश कहाए।
अनन्तनाथ जी वर्तमान के, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
श्री विमलप्रभ भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री पुष्पांजलि अनन्त विमलप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर उत्साह भूत के, आगम में पन्द्रहवें गाये।
वर्तमान के धर्मनाथ जिन, तीर्थंकर की पदवी पाये।।
श्री बहुलप्रभ भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री उत्साह धर्मनाथ बहुलप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर जिनवर सोलहवें, भूतकाल के जानो भाई।
शांतिनाथ प्रभु की तीनों ही, लोकों में फैली प्रभुताई।।
श्री निर्मल भावी तीर्थंकर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री परमेश्वर शांतिनाथ निर्मल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

भूतकाल के सत्रहवें जिन, ज्ञानेश्वर अतिशयकारी।
वर्तमान के कुन्थुनाथजी, जिनवर हैं त्रय पद धारी।।
चित्रगुप्तजी भावी जिनवर, को हम शीश झुकाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र सब, चरण शरण को पाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री ज्ञानेश्वर कुन्थुनाथ चित्रगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अठारहवें अतीत के, विमलेश्वर विस्मयकारी।
अरहनाथ जिन वर्तमान के, त्रय पद पाये सुखकारी।।

प्रभु समाधीगुप्त हैं भावी, तीर्थंकर मंगलकारी।
चरण वंदना करते हैं हम, श्री जिनेन्द्र हैं उपकारी।।18।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री विमलेश्वर अरहनाथ समाधिगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री यशोधर भूतकाल के, जिन उन्नीसवें कहलाए।
मल्लिनाथ जिन वर्तमान के, तीर्थंकर पदवी पाए।।
भावी जिनवर कहे स्वयंभू, भाव सहित करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।19।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री यशोधर मल्लिनाथ स्वयंभू तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णमति जिन कहे बीसवें, भूतकाल के मंगलकार।
मुनिसुव्रत जिन वर्तमान के, उनकी हम करते जयकार।।
भावी जिन कन्दर्प प्रभु का, भाव सहित करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।20।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री कृष्णमति मुनिसुव्रत कन्दर्प तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमति जिन भूतकाल के, इक्कीसवें जिन अविकारी।
नमिनाथ जिन वर्तमान के, श्वेत कमल लक्षण धारी।।
श्री जयनाथ जिनेश्वर भावी, करते हम प्रभु का अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।21।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री ज्ञानमति नमिनाथ जयनाथ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल में बाइसवें जिन, शुद्धमतिजी कहलाए।
वर्तमान के नेमिनाथजी, तीर्थंकर पदवी पाए।।
श्री विमल तीर्थंकर भावी, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।22।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शुद्धमति नेमिनाथ विमल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री भद्र जिनवर तेईसवें, भूतकाल के मंगलकार।
पार्श्वनाथ जी वर्तमान के, जिनको वंदन बारम्बार।।
दिव्यवाद जिन कहे अनागत, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।23।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री भद्र पार्श्वनाथ दिव्यवाद तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तवीर्य अन्तिम तीर्थंकर, भूतकाल में हुए महान्।
वर्तमान के वर्धमान जिन, की है सिंहराज पहिचान।।
भावी जिन हैं अनन्तवीर्य जी, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।24।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अनन्तवीर्य वर्धमान अनन्तवीर्य तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल अरु वर्तमान के, और अनागत के चौबीस।
भरत क्षेत्र में तीर्थंकर के, चरणों झुका रहे हम शीश।।
मंगलकारी विघ्न विनाशक, जिन का हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।25।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डलेश्वर द्वितीयवलयोन्मुद्रित अतीत अनागत वर्तमान काल संबंधी समस्त तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

सोरठा- विद्यमान तीर्थेश, जानो बीस विदेह में।
हरते जग का क्लेश, करूँ अर्चना भाव से।।

तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

विद्यमान 20 तीर्थंकर के अर्घ्य

(छंद-ताटंक)

जिनका यश सौरभ स्वरूप शुभ, शोभित होता मंगलकार।
समवशरण में सीमंधर जिन, दिव्य देशना दें मनहार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सीमंधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगमंधरजी तीनों युग में, सर्वचराचर के ज्ञाता।
नय प्रमाण युगपत् वस्तु के, ज्ञानी हैं जग में त्राता।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री युगमंधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को पाकर के शुभ, निज आतम का ध्यान किए।
बाहु जिन तीर्थेश लोक में, जन-जन का कल्याण किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री बाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के नेता सुबाहु जिन, कर्म कलंक विनाश किए।
प्राप्त किए जो शाश्वत शिव सुख, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सुबाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक में उत्तम संयम, प्राप्त किए संजातक देव।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, वंदूँ जिनके चरण सदैव।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री संजातकजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंप्रभ जिनका चिह्न चन्द्रमा, अभिनव गुण जो प्राप्त किए।
मंगल छाया सर्वलोक में, देवों ने जयकार किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री स्वयंप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृष को पाने वाले अनुपम, वृषभानन शुभ नाम रहा।
जिन की पूजा से हो जाता, भक्तों का कल्याण अहा।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वृषभाननजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख पाने वाले, पाए वीर्य अनंत महान्।
अनंतवीर्य जिनवर के चरणों, भक्त करें सम्यक् श्रद्धान।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री अनंतवीर्यजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका तेज सूर्य की आभा, फीका करता मंगलकार।
सूरीप्रभ जिनवर के चरणों, वंदन मेरा बारंबार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सूरिप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थङ्कर पद पाने वाले, जन्मे प्रभो ज्ञानधारी।
श्री विशालप्रभ के चरणों की, भक्ति है शिव सुखकारी।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री विशालप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद-गीता)

प्रभु श्रेष्ठ संयम प्राप्त कीन्हें, वज्रधर कहलाए हैं।
जो कर्म भू के तोड़ने को, वज्र बनकर आए हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वज्रधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चन्द्रमा सम नयन जिनके, कहे चन्द्रानन प्रभो।
जो कर्म का विध्वंस करके, बन गये अर्हत् विभो।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री चन्द्राननजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पद्म शोभित चिह्न जिनके, जो विशद ज्ञानी कहे।
श्री चन्द्रबाहु जिन प्रभु के, भक्त सब प्राणी रहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।13।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री चन्द्रबाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति महाबल को धारते जो, चन्द्रमा लक्षण कहा।
श्री जिन भुजङ्गम नाथ का यश, यह दिखाई दे रहा।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री भुजंगमजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिय लोकवर्ती ईश के भी, ईश जिन ईश्वर रहे।
उत्तम क्षमादि दश कहे जो, धर्म के भूपति कहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री ईश्वरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिप्रभ ने धर्म नेमि, को सम्हाला हाथ है।
प्रभु मोक्षपथ के बने राही, सूर्य लक्षण साथ है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री नेमिप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वीर के भी वीर अनुपम, वीरसेन जिनेश हैं।
वह कर्म की सेना पराजित, कर हुए तीर्थेश हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वीरसेनजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सर्वज्ञाता और दृष्टा, लोक में पहचानिए।
श्री महाभद्र जिनेश जग में, सर्व मंगल मानिए।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।18।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री महाभद्रजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवयश के चरण में यश, भी झुकाता भाल है।
शुभ चिह्न स्वस्तिक से सुशोभित, की यहाँ जयमाल है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।19।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री देवयशजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं पद्म लक्षण युक्त जिनवर, अजितवीर्य कहलाये हैं।
हम जिन प्रभु के दर्श करके, भाव से गुण गाये हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु चरण में, भाव से शत्-शत् नमन्।।20।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री अजितवीर्यजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते यह बीस।
कभी अधिकतम साठ एक सौ, होते जिन्हें झुकाऊँ शीश।।
परम अर्चना हेतु प्रभु की, श्रेष्ठ पुष्प ले आए शरण।
परम पूज्य तीर्थंकर जिनके, चरणों में शत्-शत् वंदन।।21।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब प्रतिष्ठाध्वरोद्यापने मुख्य पूजार्हं वलयोन्मुद्रित विदेह क्षेत्रे षष्ठिसहितैकशतजिनेश संयुक्त नित्यविहरमाण विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- अष्ट मूलगुण प्राप्त हैं, सिद्ध अनन्तानन्त।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, होय कर्म का अन्त।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सिद्धों के 8 मूलगुण

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतज्ञानगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतदर्शनगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय का नाश किए फिर, पाए अव्याबाध स्वरूप।
परम सिद्ध परमेष्ठी जिन के, पद में झुकते हैं शत् भूप।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अव्याबाधत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय मोहित करता है, उसका भी जो घात किए।
परम सिद्ध परमेष्ठी बनकर, सुख अनंत को प्राप्त किए।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतसुखगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उसका आप विनाश किए।
अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अवगाहनत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभु विनाश किए।
सूक्ष्मत्व गुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने सूक्ष्मत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अगुरुलघुत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों का कर्त्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
वीर्यानन्त के धारी जिनको, वंदन मेरा बारम्बार।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतवीर्यत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्धों के हैं आठ गुण, सिद्ध शिला पर वास।
जिन सिद्धों को पूजकर, पाऊँ मोक्ष निवास।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे पूजार्ह चतुर्थ वलयोन्मुद्रित सिद्ध परमेष्ठिने अष्टगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- सर्व लोक में पूज्य हैं जैनाचार्य महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, गाते हैं गुणगान।।

पञ्चम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य के 36 मूलगुण

पच्चिस दोष निवारते, धारें सद्श्रद्धान।
परम दर्शनाचार युत, हैं आचार्य महान्।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट अंग से युक्त है, पावन सम्यक्ज्ञान।
सम्यक् ज्ञानाचार युत, हैं आचार्य महान्।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत समीती, तिय गुप्ति चारित्र।
यह चारित्राचार है, धारो परम पवित्र।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह भेदों युत तप कहा, अंतरंग बहिरंग।
तपाचार पालन करें, मन में धार उमंग।।4।।

ॐ ह्रीं तपाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शक्ति को जानकर, नहीं अधिक न हीन।
वीर्याचार में निरत हैं, जैनाचार्य प्रवीण।।5।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

क्रोध भाव का कर अभाव जो, क्षमा धर्म प्रगटावें।
पञ्चाचार पालने वाले, जैनाचार्य कहावें।।

परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानापमान को छोड़ पूर्णतः, मार्दव धर्म जगावें।
पञ्चाचार के धारी मुनिवर, जैनाचार्य कहावें।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव पाने वाले, ऋजुगति को पाते।
पञ्चाचार परायण मुनिवर, को नर-नारी ध्याते।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म पाए जो, मूर्छा त्याग किए हैं।
निर्मलता अन्तर में पाए, चित् में चित्त दिए हैं।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म को पाने वाले, स्वयं सत्व को पायें।
तीन लोक में सत्य धर्म की, महिमा जो दिखलायें।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण असंयम तजने वाले, सत् संयम को धारे।
लगे अनादि कर्म क्षणिक में, नाश किए वह सारे।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप के द्वारा अपने, कर्म नशाते सारे।
अविनाशी सुख पाने वाले, गुरुवर रहे हमारे।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धर्म को पाने वाले, मुनिवर श्रेष्ठ रहे हैं।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह त्यागी, जैनाचार्य कहे हैं।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रखते नहीं राग किञ्चित् भी, आकिञ्चन शुभ पाए।
वीतरागता धारी मुनिवर, जैनाचार्य कहाए।।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, परम ब्रह्मव्रतधारी।
निज स्वभाव में लीन रहें नित, जो स्व पर उपकारी।
परम पूज्य आचार्यश्री की, महिमा विस्मयकारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छंद)

तज विषय कषायाहारा, तप अनशन धारें प्यारा।
जो द्वादश तप को धारे, गुरुवर आचार्य हमारे।।16।।

ॐ ह्रीं अनशन तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न पूरा भोजन करते, तप ऊनोदर आचरते।
जो द्वादश तप को धारे, गुरुवर आचार्य हमारे।।17।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्य तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को वशकर रस त्यागें, निज आत्म सुहित में लागें।
जो द्वादश तप को धारें, गुरुवर आचार्य हमारे।।18।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप व्रत संख्यान के धारी, आचार्य हैं मंगलकारी।
जो द्वादश तप को धारें, गुरुवर आचार्य हमारे।।19।।

ॐ ह्रीं वृत्ति परिसंख्यान तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विविक्त शय्यासन धारी, इस जग में करुणाकारी।
जो द्वादश तप को धारे, गुरुवर आचार्य हमारे।।20।।

ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो काय-क्लेश को धारें, तीनों ही योग सम्हारें।
जो द्वादश तप को धारें, गुरुवर आचार्य हमारे।।21।।

ॐ ह्रीं काय-क्लेश तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं प्रायश्चित्त तपधारी, इनकी है महिमा न्यारी।
यह अंतरंग तप जानो, आचार्य का गुण पहिचानो।।22।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब विनय सुतप को जानो, शुभ पञ्च भेद पहिचानो।
आचार्य विनय तपधारी, जन-जन के करुणाकारी।।23।।

ॐ ह्रीं विनय तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप वैय्यावृत्ति पाते, तप के सब दोष नशाते।
आचार्य सुतप के धारी, जिनकी है महिमा न्यारी।।24।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वाध्याय तप धारे, वह हैं आचार्य हमारे।
हम उनका वंदन करते, चरणों में माथा धरते।।25।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वयविध व्युत्सर्ग कहावें, आचार्य गुरु जो पावें।
हम उनके गुण को गाते, चरणों में शीश झुकाते।।26।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ध्यान बड़ा मनहारी, तप है जो मंगलकारी।
करते हैं जग के प्राणी, वह पावे मुक्ति रानी।।27।।

ॐ ह्रीं ध्यान तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

मन की चेष्टा का निग्रह कर, मनोगुप्ति को धार रहे।
मनोगुप्ति के धारी पावन, परम पूज्य आचार्य कहे।।28।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की चेष्टाएँ तजकर, वचनगुप्ति को धार रहे।
वचनगुप्ति के धारी मेरे, परम पूज्य आचार्य कहे।।29।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय की चेष्टा का निग्रह कर, कायगुप्ति को धार रहे।
काय गुप्ति के धारी पावन, परम पूज्य आचार्य कहे।।30।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मन में जो समता को धारें, रागद्वेष मद को भी टारें।
जैनाचार्य साम्य व्रतधारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।31।।

ॐ ह्रीं सामायिक आवश्यक कर्मधारी आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खुश हो जिनदर्शन को जावें, देव वंदना कर गुण गावें।
जैनाचार्य गुणों के धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।32।।

ॐ ह्रीं वंदना आवश्यक निरत आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धों के गुण गाते, स्तुति करके खुश हो जाते।
जैनाचार्य संस्तव गुणधारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।33।।

ॐ ह्रीं स्तवन आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष यदि कोई लग जावें, गुरु के आगे उन्हें सुनावें।
करते प्रतिक्रमण हैं भाई, जैनाचार्य जगत् सुखदायी।।34।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान भावना में रुचि लावें, स्वाध्याय कर ज्ञान बढ़ावें।
स्वाध्याय आवश्यक धारी, जैनाचार्य पद ढोक हमारी।।35।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से ममता भाव घटावें, आत्मध्यान में रत हो जावें।
आवश्यक व्युत्सर्ग के धारी, जैनाचार्य पद ढोक हमारी।।36।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गावश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन दीक्षा देते स्वयं, पालें पञ्चाचार।
परमेष्ठी आचार्य को, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोद्यापने पूजार्हं पञ्चम वलयोन्मुद्रित षट्त्रिंशत मूलगुण संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम् वलयः

दोहा- उपाध्याय के गुण कहे, आगम में पच्चीस।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

षष्ठम् वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

उपाध्याय के 25 मूलगुण

(छन्द-तांटक)

आचारांग मुनि चर्या का, जिसमें है सम्पूर्ण कथन।
समिति गुप्ति व्रत शुद्धि का भी, इसमें है पूरा वर्णन।।
सहस अठारह पद हैं इसके, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टादश सहस्र पद भूषित प्रथम आचारांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा सूत्रकृतांग शुभम् है, ज्ञान विनय का जिसमें सार।
क्या है कल्प अकल्प ज्ञानमय, धर्म रूप कैसा व्यवहार।।
पद सहस्र छत्तिस हैं जिसके, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत सहस्र पद भूषित द्वितीय सूत्रकृतांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थानांग तीसरा पद है, देख शोध थल पर चलना।
एक-एक दो रूप हैं पावन, शब्द अर्थमय ही ढलना।।

पद ब्यालीस सहस्र हैं जिसके, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत सहस्र पद भूषित तृतीय स्थानांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा समवायांग शास्त्र है, द्रव्य क्षेत्र अरु भाव प्रधान।
धर्माधर्माकाश जीव के, ऽसंख्य प्रदेश का रहा प्रमाण।।
एक लाख चौसठ हजार हैं, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं एकलक्ष चतुःषष्ठि सहस्र पद भूषित चतुर्थ समवायांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम अंग व्याख्या प्रज्ञप्ति, विज्ञानमयी जो है पावन।
साठ हजार प्रश्न जीवादिक, उत्तर सहित जो मन भावन।।
लाख दोय अट्ठाईस सहस्रमय, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं द्वयलक्ष अष्टविंशति सहस्रपद भूषित पंचम व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर आदिपुरुषों के, वैभव गुण का किया कथन।
ज्ञातृ धर्मकथांग है षष्ठम्, धर्म कथाओं का वर्णन।।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत सहस्रपद भूषित षष्ठम् ज्ञातृधर्म कथांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अंग उपासकाध्ययन, श्रावक चर्या का वर्णन।
मूल गुणों अरु कर्त्तव्यों का, जिसमें है सम्पूर्ण कथन।

सप्तति सहस्र लक्ष एकादश, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्तति सहस्र पद भूषित सप्तम उपासगाध्ययनांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तःकृत दशांग अष्टम है, उपसर्ग विजय का करे प्रकाश।
प्रति तीर्थंकर काल मैं दश-दश, अन्तःकृत केवलि का वास।।
तेईस लाख अट्ठाईस सहस्र शुभ, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्षअष्टाविंशति सहस्र पद भूषित अष्टम अन्तःकृतदशांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुत्तरोपपादिक दशांग नवम् है, विजयादि अनुत्तर में वास।
प्रति तीर्थंकर काल में दश-दश, उपसर्ग विजय का करें प्रकाश।।
लाख वानवे सहस्र चवालिस, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्ष चतुर्चत्वारिंशद् सहस्र पद भूषित नवम् अनुत्तरोपपादिक दशांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्न व्याकरण अंग दशम है, प्रश्नोत्तर युत पूर्ण कथन।
आक्षेप और विक्षेपवाद का, जिसमें है पूरा वर्णन।।
तिरानवे लाख सोलह हजार शुभ, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडश सहस्र पद भूषित दशम व्याकरणांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपाक सूत्र शुभ अंग एकादश, पुण्य पाप फल का द्योतक।
हित और अहित शुभाशुभ का जो, शास्त्र परम है उद्योतक।।

एक करोड़ लाख चौरासी, श्रुत पद को मैं सिर नाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं एककोटि चतुरशीतिलक्षपद भूषित विपाक सूत्रांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

कथन है षट् द्रव्य का शुभ, एक कोटी पद कहे।
मुनि पूर्वधर उत्पाद पाठक, लोक में पावन कहे।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।12।।

ॐ ह्रीं कोटि पद युक्त उत्पाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनय दुर्नय युक्त पावन, पूर्व अग्रायणी रहा।
छियानवें हैं लाख पद शुभ, यही आगम में कहा।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।13।।

ॐ ह्रीं षड् नवति लक्षपद युक्त अग्रायणीय पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य गुण पर्याय बल का, कथित आगम जानिए।
पूर्व वीर्यानुवाद में पद, लाख सत्तर मानिए।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं सप्तति लक्षपद युक्त वीर्यानुवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति-नास्ति प्रवाद पावन, लाख षष्ठि पद कहे।
मुनि सप्तभंगी सहित पाठक, लोक में पावन रहे।।

गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं षष्ठि लक्षपद युक्त अस्तिनास्ति पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक कम हैं कोटि पद शुभ, ज्ञान आठों का कथन।
शुभ पूर्व ज्ञान प्रवाद में सब, ज्ञान से करते मनन।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं नव नवति लक्षपद युक्त ज्ञान प्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व सत्य प्रवाद में शुभ, कोटि पद अरु छह रहे।
सत्य का अरु झूठ का सब, कथन आगम में कहे।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं एक कोटि षट्पद युक्त सत्यप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि छब्बिस सहित पावन, पूर्व आत्म प्रवाद है।
जो कथन करके आत्मा का, हो विशद आह्लाद है।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटिपद युक्त आत्मप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि पद अरु लाख अस्सी, कहे कर्म प्रवाद में।
शुभ कथन कीन्हा कर्म का सब, शास्त्र के अनुवाद में।।

गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं एक कोटि अशीति लक्षपद युक्त कर्मप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्रत्याख्यान में शुभ, लख चौरासी पद रहे।
नय प्रमाणादि कथन युत, शुभ न्यास जिसमें भी कहे।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्षपद युक्त प्रत्याख्यान पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र विद्या विधि संयुत, विद्यानुवाद पूरब कहा।
एक कोटि लाख दश पद, सहित यह आगम रहा।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।21।।

ॐ ह्रीं एककोटि दश लक्षपद युक्त विद्यानुवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणवाद पूरब है पावन, कोटि छब्बिस पद रहे।
पुण्य पुरुषों की कथाएँ, जैन आगम जो कहे।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।22।।

ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटिपद युक्त कल्याणवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि तेरह पद सहित शुभ, पूर्व प्रणावाय है।
शुभ वैद्य औषधि के कथन युत, ग्रंथ पा हर्षाय है।।

गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।23।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश कोटिपद युक्त प्राणवाय पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया विशाल है पूर्व पावन, कोटि पद शुभ आठ हैं।
छंद के संगीत के शुभ, कला के भी पाठ हैं।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।24।।

ॐ ह्रीं अष्ट कोटिपद युक्त क्रियाविशाल पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकबिन्दु सार पूरब, लोक में पावन कहा।
जो कोटि द्वादश अर्द्ध संयुत, जैन आगम शुभ रहा।।
गुरु वंदना के भाव लेकर, शरण में हम आए हैं।
उपाध्याय की शुभ अर्चना को, द्रव्य पावन लाए हैं।।25।।

ॐ ह्रीं अर्द्धाधिक द्वादश कोटिपद युक्त त्रैलोक्यबिन्दु पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- उपाध्याय की भक्ति कर, पाऊँ आतम ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ चलूँ, मिले सुपद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव विधाने मुख्य पूजार्ह षष्ठम वलयोन्मुद्रित द्वादशांग श्रुतदेवताभ्यतदाराधकोपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम् वलयः

दोहा- कहे मूलगुण साधु के, आगम में अठबीस।
साधु पद के हेतु हम, चरण झुकाते शीश।।

सप्तम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

साधु परमेष्ठी के 28 अर्घ्य

राग-द्वेष हिंसा के त्यागी, शुद्धभाव के धारी हैं।
परम अहिंसा धारण करते, महाव्रती अविकारी हैं।।
साधु हैं निर्ग्रंथ दिगम्बर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ वचन न कभी बोलते, सत्य महाव्रतधारी हैं।
आगम के अनुसार बोलते, महाव्रती अविकारी हैं।।
साधु हैं निर्ग्रंथ दिगम्बर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञा बिन जो पर वस्तु के, पूर्ण रूप परिहारी हैं।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, महाव्रती अविकारी हैं।।
साधु हैं निर्ग्रंथ दिगम्बर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलव्रतों का पालन करते, ब्रह्मचर्य व्रतधारी हैं।
स्त्री में मन नहीं रमाते, महाव्रती अविकारी हैं।।
साधु हैं निर्ग्रंथ दिगम्बर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग बहिरंग परिग्रह, दोनों के परिहारी हैं।
पूर्ण अपरिग्रह व्रत को धारें, महाव्रती अविकारी हैं।।

साधु हैं निर्ग्रंथ दिगम्बर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ भूमि को लखकर, मुनि दिगम्बर करें विहार।
मन-वच-तन से ईर्यापथ में, रखते हैं जो यत्नाचार।।
ईर्यापथ के धारी मुनिवर, की है महिमा अपरंपार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन बोलते हितमित प्रिय जो, श्रेष्ठ जैन आगम अनुसार।
अतीचार आदि से बचते, पालन करते यत्नाचार।।
भाषा समिति के धारी मुनिवर, की है महिमा अपरंपार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार ।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख शोध करके जो प्रासुक, शुद्ध ग्रहण करते आहार।
रखते नहीं गृद्धता किञ्चित्, सदा धारते यत्नाचार।।
समिति एषणा धारी मुनिवर, की है महिमा अपरंपार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।8।।

ॐ ह्रीं एषणा समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख शोध करके जो वस्तु, ग्रहण करें या निक्षेपण।
यत्नाचार पूर्वक सारी, चर्या करते हैं क्षण-क्षण।।
आदान-निक्षेपण समिति के धारी, की है महिमा अपरंपार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।9।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपण समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ममत्व त्यागे निज तन से, निज स्वरूप में रहते लीन।
वह व्युत्सर्ग समिति के धारी, मोक्षमार्ग में रहे प्रवीण।।
परम दिगम्बर श्रेष्ठ मुनीश्वर, की है महिमा अपरंपार।
उनके चरणों विशद भाव से, वंदन मेरा बारंबार।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छंद)

शीत उष्ण मृदु कठिन लघु गुरु, वस्तू रूक्ष और स्निग्ध।
स्पर्शन के आठ भेद यह, सर्वलोक में रहे प्रसिद्ध।।
राग-द्वेष न करते इनमें, धारें समता भाव मुनीश।
विशद भाव से वंदन करते, उनके चरणों में धर शीश।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शेनेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टा-मीठा कटुक कषायल, तिक्त पञ्च यह रस के भेद।
साम्यभाव के धारी मुनिवर, पाकर करें हर्ष न खेद।।
राग-द्वेष न करते इनमें, धारें समता भाव मुनीश।
विशद भाव से वंदन करते, उनके चरणों में धर शीश।।12।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के विषय कहे दो, जैनागम में वीर जिनेश।
वीतरागता धारी मुनिवर, संयम पालन करें विशेष।।
राग-द्वेष न करते इनमें, धारें समता भाव मुनीश।
विशद भाव से वंदन करते, उनके चरणों में धर शीश।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत कृष्ण अरु पीत लाल रंग, नील पञ्च हैं रस के भेद।
साम्यभाव के धारी मुनिवर, पाकर करें हर्ष न खेद।।

राग-द्वेष न करते इनमें, धारें समता भाव मुनीश।
विशद भाव से वंदन करते, उनके चरणों में धर शीश।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा रे गा मा पा धा नि यह, कर्णेन्द्रिय के विषय कहे।
वीतरागता धारी मुनिवर, इनमें न अनुरक्त रहे।।
राग-द्वेष न करते इनमें, धारे समताभाव मुनीश।
विशद भाव से वंदन करते, उनके चरणों में धर शीश।।15।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छंद)

क्षिति शयन करें मुनीश, साम्यभाव धारते।
धर्मध्यान आचरण औ, शील वो सम्हारते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।16।।

ॐ ह्रीं भूशयन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्हवन न करें मुनीश, देह राग त्यागते।
उष्णता में स्वेद पाय, अम्बु नहिं चाहते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।17।।

ॐ ह्रीं अस्नान नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारते निर्ग्रन्थ रूप, वस्त्र नहीं चाहते।
निज स्वरूप में मुनीश, नित्य ही अवगाहते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।18।।

ॐ ह्रीं सर्वथा वस्त्र त्याग नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथ से स्वयं ही, बाल जो उखाड़ते।
जैन मुनीश देह से, ममत्व भाव त्यागते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।19।।

ॐ ह्रीं केशलोंचन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दन्त नहीं धोवते, श्रृंगार पूर्ण छोड़ते।
जीव दया धर्म से, मुनीश नाता जोड़ते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।20।।

ॐ ह्रीं दन्तधोवनवर्जन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भोजन एक बार, जैन मुनि चाहते।
रक्षा हेतु देह के न, भोग मन में चाहते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।21।।

ॐ ह्रीं एकभुक्ति नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़े रहे सु ले आहार, देह शक्ति देखते।
जो समाधि काल तक, देह बल को पेखते।।
भेद ज्ञान प्राप्त कर, लीन रहें ध्यान में।
समय जो बितावते हैं, प्रभु के गुणगान में।।22।।

ॐ ह्रीं स्थितभोजन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

दुर्ध्यानों का त्याग करें जो, जीवों में समता पावें।
तीन काल करते सामायिक, आवश्यक करते जावें।।

परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की भक्ति, परमेष्ठी को नित ध्यावें।
सरल सौम्य भावों के द्वारा, स्तुति कर जिन गुण गावें।।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वंदना करें भाव से, दोष रहित जिन गुण गावें।
उनके गुण को पाने हेतु, सतत् भावना जो भावें।।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहोरात्रि में मन-वच-तन से, दोष कोई भी लग जावे।
आलोचन कर प्रायश्चित्त लें, प्रतिक्रमण वह कहलावे।।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-तन से त्याग करें जो, नहीं रोष मन में लावें।
प्रत्याख्यान कहा आगम में, साधु नित्य इसे पावें।।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से ममता भाव त्याग कर, निज आतम को जो ध्यावे।
पावन ध्यान लगावे मन से, कायोत्सर्ग कहा जावे।।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ मुनि के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, सादर शीश झुकाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- साधु संयम के धनी, रत्नत्रय के कोष।
निरतिचार व्रत पालते, होते जो निर्दोष।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब प्रतिष्ठोत्वसे पूजार्ह सप्तम वलयोन्मुद्रित अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम् वलयः

दोहा- अष्ट ऋद्धियों के यहाँ, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ।।

अष्टम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ऋद्धियों के आठ अर्घ्य

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अवधि मनःपर्यय केवल।
बीज कोष्ठ पादानुसारिणी, प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि मंगल।।
प्रत्येक बुद्धि वादित्व पूर्व दश, अरु चौदह पूरब में चित्त।
दूर गंध स्पर्श श्रवण रस, संभिन्न श्रोतृ अष्टांग निमित्त।।
सर्व ऋद्धियों से मुनिवर की, प्रखर बुद्धि हो सम्यक्ज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम उनका गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्योऽष्टादश भेदयुत बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हैं भेद ऋद्धि चारण के, अग्नि जल वायु आकाश।
पुष्प मेघ जल ज्योतिष जंघा, चारण भेद कहे यह खास।।

गमन करें ऋद्धिधारी मुनि, जीव नहीं तब पावें कष्ट।
आत्मध्यान तप के द्वारा मुनि, अष्ट कर्म कर देते नष्ट।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो नव भेदयुतचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि के शुभ, एकादश हैं भेद प्रधान।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, प्राप्ति अरु प्राकाम्य महान्।।
हैं ईशत्व वशित्व भेद यह, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघात ऋद्धि को पाने, करूँ मुनीश्वर का गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो एकादश भेदयुत विक्रिया ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनागम में तप ऋद्धि के, भाई भेद बताए सात।
उग्र तप्त अरु घोर महातप, उग्र तपोतप हैं विख्यात।।
घोर पराक्रम अघोर ब्रह्मचर्य, तप के अतिशय रहे महान्।
तपधारी मुनिवर की पूजा, करके करते हैं गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो सप्तभेदयुत तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल ऋद्धि के तीन भेद शुभ, आगम में बतलाते हैं।
मन बल वचन काय बल ऋद्धि, जैन मुनीश्वर पाते हैं।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, पावन ऋद्धी पाने को।
कर्म नाशकर अपने सारे, शिवपुर नगरी जाने को।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो त्रयभेदयुत बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट भेद औषधि ऋद्धि के, आमर्षौषधि रहा प्रधान।
खेल्लौषधि अरु जल्ल मल्ल शुभ, विडौषधि सर्वौषधि वान।।

मुख निर्विष दृष्टि निर्विष यह, औषधि ऋद्धि अष्ट प्रकार।
ऋद्धिधारी मुनिवर को हम, करते वंदन बारंबार।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो अष्टभेदयुत औषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद कहे छह रस ऋद्धी के, जैनागम में श्री जिनेश।
आशीर्विष दृष्टि विष ऋद्धी, पाते हैं जिन मुनि विशेष।।
क्षीर मधु अमृतस्रावि घृत, स्रावि रस ऋद्धि को धार।
मुनिवर रस ऋद्धि को पाते, तप के द्वारा विविध प्रकार।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो षड्भेदयुत रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षीण महानस ऋद्धि, के दो भेद कहे तीर्थेश।
प्रथम कहा अक्षीण महानस, और महालय कहा विशेष।।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरंपार।
उनके चरणों वंदन करते, भाव सहित हम बारंबार।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिन मुनिभ्यो अक्षीण महानस एवं अक्षीण महालय ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि आदि अष्ट ऋद्धियों के, चौंसठ बतलाए प्रभेद।
भाव सहित हम पूजा करते, हरो मुनीश्वर मेरा खेद।।
ऋद्धि सिद्धियों को तजकर मम्, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।
सर्व ऋद्धि धारी मुनियों के, श्री चरणों में विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे पूजार्ह अष्टम वलयोन्मुद्रित चतुःषष्टि ऋद्धिधारक अतीत अनागत वर्तमानकाल सम्बन्धी सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्मादि के अर्घ्य

वस्तु का स्वभाव धर्म है, क्षमा आदि दश धर्म रहे।
रत्नत्रय शुभ धर्म अहिंसा, परम धर्म जिनदेव कहे।।

ऐसे पावन परम धर्म को, पाने हेतु आये नाथ !।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों झुका रहे हैं माथ।।1।।

ॐ ह्रीं दशलक्षणोत्तमादि त्रिलक्षण सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप वस्तु स्वभावयुक्त अहिंसादि व्रत रूप पावन जिनधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख रहे अट्ठावन हजार।
और पञ्च पद द्वादशांग के, सर्वलोक में मंगलकार।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह युत, जैनागम है अपरंपार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते बारंबार।।2।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिक एकशत कोटि त्रयोशीतिलक्ष अष्ट पंचाशत सहस्र पंच पद संयुक्त एकादशांग चतुर्दश पूर्व रूप द्वादशांग जिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ सौ पच्चीस कोटि लाख हैं, त्रैपन अरु अट्ठाइस हजार।
बावन कम जिनबिम्ब लोक के, जिनकी महिमा अपरम्पार।।
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, अतिशयकारी मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं नवशत पंचविंशति कोटि त्रिपंचाशतलक्ष अष्टाविंशति सहस्र नवशताष्ट चत्वारिंशत प्रमित अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ करोड़ लाख छप्पन अरु, सहस्र सत्तानवे सौ हैं चार।
इक्यासी जानो अधिक जिनालय, अतिशयकारी अपरम्पार।।
घंटा तोरण युक्त मनोहर, जिन चैत्यालय मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टकोटि षट्पंचाशत लक्ष सप्त नवति सहस्र चतुःशत एकाशीति संख्या-प्रमिताकृत्रिम जिनालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु जग में पावन।
जैनागम जिनधर्म चैत्य अरु, चैत्यालय हैं मनभावन।।

परम यागमण्डल विधान यह, हमने किया है मंगलकार।
हाथ जोड़कर वंदन करते, नवदेवों को बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- विघ्न क्षोभ क्षय होय, बढ़े शांति अरु पुष्टता।
सर्व अमंगल खोय, श्रेष्ठ होय मंगल सदा।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य :- ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः स्वाहा। *(9, 27 या 108 बार जाप करें।)*

समुच्चय जयमाला

दोहा- किया यागमण्डल यहाँ, हमने श्रेष्ठ विधान।
गाते हैं जयमालिका, करने निज कल्याण।।

तर्ज- हे दीनबन्धु.... (शेर चाल)

करते हैं यागमण्डल जो भक्ति भाव से,
होते हैं पार भव से वह धर्म नाव से।
आते हैं देव स्वर्ग से चारों निकाय के,
गाते हैं गीत जिन के चरणों में आय के।।
जय-2 जिनेन्द्र अर्हत् हैं ज्ञान के धारी,
पाते हैं मूलगुण प्रभु छियालीस अविकारी।
जय सिद्ध प्रभु कर्म आठ नाश किए हैं,
जो सिद्धशिला पर जाके वास किए हैं।
देते हैं मुनि दीक्षा आचार पालते,
आचार्य परम गुरु का शुभ पद सम्हालते।।
पढ़ते पढ़ाते हैं जो मुनियों को भी अरे,
साधु हैं उपाध्याय श्री ज्ञान में खरे।

जिन सर्वसाधु लोक में आरंभहीन हैं,
शुभ दर्श-ज्ञान-चारित तप में प्रवीण हैं।।
उत्तम क्षमादि धर्म दश आप जानिए,
वस्तु स्वभाव धर्म का शुभ आप मानिए।
वाणीं जिनेन्द्र की शुभ ॐकारमयी है,
वह भव्य जीव के लिए शुभ कर्म क्षयी है।।
जिनबिम्ब जो प्रतिष्ठित वह चैत्य कहे हैं,
वह कृत्रिम-अकृत्रिम दो भेद रहे हैं।
जिनबिम्ब का जो आलय मंदिर उसे कहा,
जो कृत्रिम-अकृत्रिम दो रूप में रहा।।
नवदेव यह हमारे जग में प्रसिद्ध हैं,
भक्ति से इनकी होते सब कार्य सिद्ध हैं।
मम् नेत्र सफल हो गये तव दर्श जो मिला,
करके चरण की पूजा सौभाग्य जो खिला।
द्वय हाथ सफल हो गये अरु कान भी हुए,
जीवन सफल हुआ है तव पाद जो छुए।
जब तक है श्वाँस कंठ में तव दर्श हम करें,
तव ध्यान 'विशद' करके अघ कर्म सब हरें।।

दोहा- करके पूजा यज्ञ हम, पाएँ धर्म प्रकाश।
वंदन करके भाव से, करें कर्म का नाश।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् यज्ञ प्रतिष्ठा महोत्सवे सर्व यज्ञेश्वर जिनदेवेभ्यो समुच्चय जयमाला जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पूजाकर हे नाथ ! सुख शांति आनंद हो।
चरण झुकाऊँ माथ, शिवपुर में मम् वास हो।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है....

श्री जिनवर अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं-2
यागमण्डल की आरति कर हम, करते जय-जयकार हैं-2

परमेष्ठी हैं पाँच हमारे, जग में अतिशयकारी जी-2
मंगल उत्तम शरण चार हैं, इनकी महिमा न्यारी जी-2
श्री जिनवर.....।।1।।

भूत-भविष्यत-वर्तमान के, चौबिस जिनवर जानो जी-2
इनकी महिमा सर्वलोक में, सर्वश्रेष्ठ पहिचानो जी-2
श्री जिनवर.....।।2।।

पंच विदेहों के विदेह उप, एक सौ आठ कहाए जी-2
विद्यमान तीर्थंकर उनमें, बीस जिनेश्वर गाए जी-2
श्री जिनवर.....।।3।।

पंचाचार का पालन करते, जिन दीक्षा के दाता जी-2
उपाध्याय उपदेशक होते, सबके भाग्य विधाता जी-2
श्री जिनवर.....।।4।।

'विशद' साधु रत्नत्रयधारी, तप से ऋद्धि पाते जी-2
जैनधर्म आगम चैत्यालय, जिन प्रतिमा को ध्याते जी-2
श्री जिनवर.....।।5।।

●●●

प्रशस्ति

भारत देश प्रदेश यह नाम है राजस्थान।
जयपुर जिला समीप है, बस्सी नगर महान्।।1।।
नगर बीच मंदिर बड़ा, पार्श्वनाथ भगवान।
मूलनायक जिसमें रहे, वीतराग की खान।।2।।
भव्य बनी नसिया यहाँ, बस्सी नगर समीप।
हरित वर्ण के पार्श्व जिन, शोभित यहाँ सदीप।।3।।
छोटे मंदिर में प्रभु, आदिनाथ भगवान।
जिनके दर्शन की रही, अजब निराली शान।।4।।
जिनके शुभ चरणार में, पूर्ण हुआ शुभ कार्य।
जिसके द्वारा भक्ति कर, पुण्य कमाओ आर्य।।5।।
पच्चीस सौ चौतीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
संवत् पैंसठ बीस सौ, जानो श्रेष्ठ महान्।।6।।
लिखा यागमण्डल परम, शांतिकार विधान।
ज्येष्ठ माह की अष्टमी, को पाया अवशान।।7।।
लेखक का शुभ भाव है, शब्द हैं मंगल रूप।
पूजा का आधार यह, भविजन के अनुरूप।।8।।
श्री जिन के आशीष से, पाया जो भी ज्ञान।
उसका ही संक्षेप में, किया गया गुणगान।।9।।
माँ जिनवाणी की कृपा, वर्षे दिन अरु रात।
ज्ञान ध्यान की क्यारियाँ, फूले फले प्रभात।।10।।
यही भावना भा रहे, चरणों में धर शीश।
देव-शास्त्र-गुरु का मुझे, मिले पूर्ण आशीष।।11।।

***

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।
अर्हन्त-भाषित बै न पूजूँ द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जयि होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।**
सर्वपूज्य पद पूजहूँ बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभयो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ बिराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।
दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

वसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

दोहा- **घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।**
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज।।8।।

अथेष्टक प्रार्थना (मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकुं सभी का।।
बोलु प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलों न पाऊं।।1।।

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने।।10।।

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःख से।।11।।

हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय हो सुबोध सुखकारी।।12।।

(परिपुष्पांजलि क्षेपण) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करो मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा भवसागर तरुं।।

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।

जिनपूजा तें सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रमतें पावे निर्वाण।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

दोहा- सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान।।
जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहि तारगण होय।।
नाथ तिहारे नामते अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं शरण राखो भगवान।।
इस अपार संसार में शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
आप प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।
मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव।।3।।
आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान।।4।।

इत्याशीर्वादः।

आशिकालेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव-भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय।।1।।

***

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं।।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणीं से, अब तक पार न पाया है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)